P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय ग्रामीण समुदाय का सामाजिक विकास और स्वयं सहायता समूह

अनुराधा गुसांई
सहायक प्राध्यपिका,
समाजशास्त्र विभाग,
एम0पी0जी0 कालेज,
मसूरी, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

आज औद्योगिक विकास तथा संचार व तकनीकी क्रान्ति के युग में भी हमारे देश की लगभग 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है इसीलिये यदि देश के विकास की बात की जाती है तो सर्वप्रथम ग्रामीण समुदाय के विकास पर जोर दिया जाता है। सर्वप्रथम महात्मा गांधी जी ने हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट किया, उनका विचार था कि असली भारत गांव में बसता है, अतः यदि देश का विकास करना है तो सर्वप्रथम ग्रामीण समुदायों का विकास करना होगा तथा अधिकांश योजनायें ग्रामीण विकास पर आधारित होनी चाहिये। कृषि ने ही आदिमानव के यायावर जीवन को स्थायित्व प्रदान किया। अतः यदि कृषि को ग्रामीण सामुदायिक जीवन तथा सभ्यता की जननी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अंग्रेजों ने भारतीय सामाजिक स्तरीकरण के परम्परागत जाति व्यवस्था का पूर्ण लाभ लिया। इसी नीति के तहत जाति व्यवस्था में शेष जो लोग भारतीय समाज में बहिष्कृत जीवन व्यतीत कर रहे थे, उनका प्रयोग अंग्रेजों ने अपने धर्म के प्रचार के लिये किया। स्वतंत्रता के पश्चात् 1951 में सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी देश की रक्षा के साथ–साथ देश के विकास को एक नई दशा व दिशा प्रदान करना। इस हेतु देश की कुछ प्रारम्भिक सरकारें कृषि विकास के माध्यम से ही देश के विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करने लगी किन्तु धीरे–धीरे आर्थिक विकास के साथ–साथ अब समाज के उत्थान के लिये भी प्रयास किये जाने लगे तथा आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास की आवश्यकता को भी महत्त्व दिया जाने लगा। इस शोध–पत्र में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की उनकी सामाजिक गतिशीलता में आये परिवर्तन तथा उनका स्वयं के प्रति दृष्टिकोण में आये परिवर्तन आदि के आधार पर सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को समझने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : स्वयं सहायता समूह, सामाजिक गतिशीलता, ग्रामीण समुदाय, विकास, समाज।

प्रस्तावना

सामान्यतः ग्रामीण समुदाय का अभिप्राय उन ग्रामीण क्षेत्रों से लगाया जाता है जहां कृषि आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था की मूल केन्द्र बिन्दु है तथा उन क्षेत्रों की लगभग पूर्ण जनसंख्या इसी धुरी के चारों ओर घूमती है। वर्तमान औद्योगिक विकास तथा संचार व तकनीकी क्रान्ति के समय में भी हमारे देश की लगभग 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। भारत गांव में बसता है। अतः यदि देश का विकास करना है तो सर्वप्रथम ग्रामीण समुदायों का विकास करना होगा तथा अधिकांश योजनायें ग्रामीण विकास पर आधारित होनी चाहिये। भारतीय ग्रामीण समुदाय का आधार कृषि ही है। कृषि विकास की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं है यह उतनी ही प्राचीन है जितना कि ग्रामीण समुदाय की अवधारणा है। चूंकि कृषि ने ही आदिमानव के यायावर जीवन को स्थायित्व प्रदान किया। अतः यदि कृषि को ग्रामीण सामुदायिक जीवन तथा सभ्यता की जननी कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ऐतिहासिक अध्ययन से भी ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से अंग्रेजों के आगमन तक कोई भी काल रहा हो, फिर वो वैदिक काल हो या किसी भी अन्य राजवंश का काल, कृषि ही अर्थव्यवस्था की धुरी रही है। इसीलिये प्रारम्भ से ही भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था कहा जाता था। लेकिन समय के साथ–साथ समाज में अनेक परिवर्तन आये विशेषकर औद्योगिक क्रान्ति तथा

मशीनीकरण के कारण विकास के इन मापदण्डों में भी परिवर्तन होने लगा। अब मूलभूत आवश्यकताओं के साथ–साथ मनुष्य के रहन–सहन के स्तर व जीवन शैली में गुणवत्ता लाना तथा उन्हें उच्चतर बनाना भी आवश्यक हो गया है। इसीलिये वर्तमान आधुनिक युग में राष्ट्रीय व प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार व परिवहन आदि की सुविधाओं में होने वाली वृद्धि भी विकास के मापदण्ड में शामिल हो गये हैं अर्थात् अब केवल आर्थिक रूप से सफल होना ही विकास नहीं है वरन् अब अर्थ के साथ–साथ मनुष्य में सामाजिक व सांस्कृतिक गुणों को विकसित करना भी विकास का एक अहम् पहलू माना जाने लगा है। इस सम्बन्ध में यू0एन0ओ0 की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि "विकास का सम्बन्ध केवल मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से ही नहीं है बल्कि जीवन की सामाजिक दशाओं में होने वाली उन्नति से भी है।

इसीलिये यदि आज किसी क्षेत्र विशेष के विकास की बात की जाती है तो सर्वप्रथम वहां के सामाजिक विकास की बात आती है, तथा अब किसी क्षेत्र विशेष में शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, सड़क व परिवहन संचार व तकनीकी ज्ञान के साथ– साथ वहां के लोगों की सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक भागीदारी तथा समाज के प्रति उनकी जागरूकता में होने वाले सकारात्मकता के रूप में सामाजिक विकास को परिभाषित किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वयं सहायता समूह ने देश के ग्रामीण इलाकों में विकास को समझाने और इसको एक गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है जिसके परिणाम हमें दक्षिण के राज्यों में अच्छे भी प्राप्त हुए हैं। इसी संदर्भ में हमने अपने राज्य उत्तराखण्ड में भी स्वयं सहायता समूह के योगदान को समझने का प्रयास इस किया है। इस शोधपत्र में हम अपने अध्ययन को भारतीय ग्रामीण समुदाय का सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका के इर्दगिर्द केन्द्रित रखने का प्रयास करेंगे।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून के विकायखण्ड डोईवाला के 10 पंचायतों को हमने अपने अध्ययन के लिए चुना। इस क्षेत्र में आबाद ग्रामों की संख्या 74 है जिनकी कुल आबादी 168986 है जिसमें 81050 महिलाएं और 87936 पुरुष हैं। इस क्षेत्र की शैक्षिक स्थिति भी अच्छी है। अत– हमें पूर्ण आशा हैं कि यहाँ से प्राप्त निष्कर्ष भी सत्यता के काफी निकट होंगे।

साहित्यवालोकन

एस0 अमानी व पुष्पलता कामेयनी के, "वूमेन इण्टरप्राइजेज इन आन्ध्र प्रदेशः स्टडी ऑफ एन0जी0ओ0 फॉर प्रोफिट ऑग्रेनाइजेशन" नामक शोध पत्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को उच्च सामाजिक स्थान प्राप्त था, किन्तु समय के साथ–साथ बाह्य आक्रमणों व बढ़ते राज्य विस्तार की नीति के कारण तात्कालिक समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रारम्भ होने लगे जिसका सर्वाधिक प्रभाव भारतीय महिलाओं पर पड़ा। शशिकला सीताराम की प्रोजेक्ट रिपोर्ट के अनुसार योजना आयोग द्वारा प्रायोजित 6 राज्यों में प्रोजेक्ट जिसका कालान्तर में उत्तराखण्ड, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ में विस्तार किया गया था, को वर्ल्ड बैंक ने भी आउट पुट के आधार पर सन्तोषजनक पाया और एस.एच.जी के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक आर्थिक उन्नयन में भी सहायक पाया। जबकि 'वी0 एस0 डिसूजा' सामाजिक विकास को बड़े ही सरल शब्दों में परिभाषित करते हुये कहते हैं कि "सामाजिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा तुलनात्मक रूप से एक सरल समाज विकसित समाज के रूप में बदल जाता है"। उक्त आधार पर कहा जा सकता है कि किसी भी क्षेत्र विशेष को सामाजिक रूप से विकसित तभी कहा जा सकता है जब उस क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोग सभ्य, सुसंस्कृत तथा विकसित समाज में रहने वाले लोगों के अनुरूप ही व्यवहार करने लगते हैं।

अंग्रेजों ने भारतीय सामाजिक स्तरीकरण के परम्परागत जाति व्यवस्था का पूर्ण लाभ लिया। इसी नीति के तहत जाति व्यवस्था में शेष जो लोग भारतीय समाज में बहिष्कृत जीवन व्यतीत कर रहे थे, उनका प्रयोग अंग्रेजों ने अपने धर्म के प्रचार के लिये किया। किन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो अंग्रेजों द्वारा अपने लाभ के लिये चलाई गई नीतियों का परिणाम भारतीय समाज की दृष्टि से काफी कुछ सकारात्मक ही रहा। चूंकि इससे पूर्व तक भारतीय समाज में संस्कृति व परम्परा के नाम पर अनेक कुरीतियां व कुप्रथायें प्रचलित थी, किन्तु अंग्रेजों द्वारा इन्हें न मानना तथा पाश्चात्य संस्कृति के बदले प्रभाव के कारण अब भारतीय समाज का बुद्धिजीवी वर्ग, जो अभी तक ऊंच–नीच, छुआ–छूत जैसी धारणाओं से घिरा हुआ था, इन सबका विरोध करने लगा। इसी का परिणाम है कि 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सर्वप्रथम विकास की एक नई शाखा के रूप में 'सामाजिक विकास' का उदय हुआ। इसके साथ ही साथ यही वह समय भी था जब देश में राष्ट्रीयता की भावना का भी उदय हुआ तथा देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने के लिये हर सम्भव प्रयास किया जाने लगा। अतः कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता से पूर्व देश को स्वतंत्र कराने के साथ–साथ स्त्री शिक्षा, ऊंच–नीच की भावना को समाप्त कर समाज में समानता की भावना का विकास करना ही सामाजिक विकास के मापदण्ड थे।

स्वतंत्रता के पश्चात्, देश की कुछ प्रारम्भिक सरकारें कृषि विकास के माध्यम से ही देश के विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करने लगी किन्तु धीरे–धीरे आर्थिक विकास के साथ–साथ अब समाज के उत्थान के लिये भी प्रयास किये जाने लगे तथा आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास की आवश्यकता को भी महत्त्व दिया जाने लगा और अब सामाजिक विकास के मापदण्डों में शिक्षा व समानता के साथ–साथ स्वास्थ्य, उत्तम जीवन शैली आदि को भी सम्मिलित किया गया। एक नवीन तथ्यों के आधार पर सामाजिक विकास परिषद, नई दिल्ली, यूनिसेफ तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सामाजिक विकास हेतु एक संयुक्त विस्तृत सूचकांक प्रस्तुत किया गया, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, जनसांख्यिकीय व लैंगिक पक्षों पर पर्याप्त ध्यान

दिया गया है। सामाजिक विकास परिषद, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2006 से 'मानव विकास प्रतिवेदन' प्रकाशित करना शुरू किया गया है, जिसमें प्रारम्भ में छः संकेतक (मापदण्ड) निर्धारित किये गये थे तथा वर्ष 2008 में दो अन्य संकेतक जोड़ दिये गये हैं।

हम अपने इस शोधपत्र में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं के पारिवारिक व सामुदायिक निर्णयों ,स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के क्षेत्र आदि को सामाजिक विकास का मापदण्ड मानकर ग्रामीण समुदाय के सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को ज्ञात करने का प्रयास करेंगे। इसके लिए हमने उक्त सभी मापदण्डों को एक अनुसूची का रूप देकर तथा उसी के आधार पर क्षेत्र–कार्य किया और इसके दौरान ग्रामीण समुदाय व स्वयं सहायता समूह से सम्बन्धित व गैर–सम्बन्धित लोगों का साक्षात्कार लेकर प्राप्त जानकारी को तालिकाबद्ध करने का प्रयास किया तथा इन्हीं तालिकाओं के विश्लेषण के द्वारा हम ग्रामीण समुदाय के सामाजिक विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका को जानने का प्रयास करेंगे। इन तालिकाओं का विवरण निम्नवत् है–

पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में महिलाओं की भूमिका

तालिका 3.1 में स्वयं सहायता समूहों का पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है। तालिका के अनुसार ग्राम पंचायत भानियावाला में कुल उत्तरदाताओं में से 50 प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात्, पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में उनकी भागीदारी में वृद्धि हुई है तो वहीं लगभग 23 प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में उनकी भूमिका पूर्ववत् ही बनी हुई है जबकि लगभग 27 प्रतिशत महिलाएं इस विषय पर कोई स्पष्ट उत्तर नहीं देती।

ग्राम पंचायत रानीपोखरी मौजा में भी 50 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि स्वयं सहायता समूहों का उनके पारिवारिक कार्यों के सम्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा अब उनकी भागीदारी में वृद्धि हुई है तथा 30 प्रतिशत महिलाओं का मानना था कि समूह का उनके पारिवारिक कार्यों के सम्पादन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और उनकी स्थिति पूर्ववत् ही बनी हुई है जबकि 20 प्रतिशत महिलाएं इस संदर्भ में कुछ नहीं कहती।

ग्राम पंचायत रानीपोखरी ग्राण्ट में लगभग 56 प्रतिशत महिलाएं समूहों के कारण पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में उनकी भागीदारी में वृद्धि की बात करती हैं जबकि 24 प्रतिशत महिलाएं ऐसी किसी भी वृद्धि की बात नहीं करती तथा 20 प्रतिशत महिलाएं तो इस विषय में कोई प्रतिक्रिया ही नहीं देती। कान्हरवाला ग्राम पंचायत में लगभग 51 प्रतिशत महिलाएं स्वीकार करती है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात्, पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में भी उनकी भूमिका में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा लगभग 31 प्रतिशत महिलाएं ऐसे किसी भी प्रभाव से इन्कार करती हैं जबकि लगभग 18 प्रतिशत महिलाएं 'कुछ कह नहीं सकते' की स्थिति में थी।

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में भूमिका का स्तर

क्र0सं0	ग्राम पंचायत	चयनित उत्तरदाता	वृद्धि हुई	%	वृद्धि नहीं हुई	%	उदासीन प्रतिक्रिया	%
1	भानियावाला	30	15	50	7	23.3	8	26.6
2	रानीपोखरी मौजा	40	20	50	12	30	8	20
3	रानीपोखरी ग्राण्ट	50	28	56	12	24	10	20
4	कान्हरवाला	45	23	51	14	31.1	8	17.7
5	जौलीग्राण्ट	40	22	55	10	25	8	20
6	माजरीग्राण्ट	55	28	50.9	15	27	12	21.8
7	रैनापुरग्राण्ट	18	10	55.5	4	22	4	22
8	हरिपुरकलां	25	15	60	6	24	4	16
9	अठूरवाला	25	15	60	7	28	3	12
10	दुधली	25	15	60	5	20	5	20
	योग	353	191	54.1	92	26.0	70	19.8

ग्राम पंचायत जौलीग्राण्ट में भी स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव महिलाओं की पारिवारिक स्थिति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यहां हम देखते हैं कि 55 प्रतिशत महिलाएं समूहों के कारण पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में अपनी भागीदारी में वृद्धि होने की बात करती हैं। जबकि 25 प्रतिशत महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तथा 20 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी थी जो अपनी पारिवारिक स्थिति को स्पष्ट नहीं करना चाहती थी। ग्राम पंचायत माजरीग्राण्ट में लगभग 51 प्रतिशत महिलाओं ने अपने पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में बढ़ती भागीदारी का कारण स्वयं सहायता समूहों से जुड़ना माना तथा 27 प्रतिशत महिलाओं का मानना था कि समूहों से जुड़ने पर भी उनकी पारिवारिक कार्यों की भागीदारी में कोई वृद्धि नहीं हुई। लगभग 22 प्रतिशत महिलाएं इस प्रश्न पर कोई स्पष्ट उत्तर नहीं देती।

ग्राम पंचायत रैनापुर ग्राण्ट में स्वयं सहायता समूहों का पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में महिलाओं की भागीदारी पर पड़े प्रभाव के प्रश्न पर लगभग 56 प्रतिशत महिलाओं ने 'वृद्धि हुई' कहा जबकि 22–22 प्रतिशत महिलाओं ने क्रमशः 'वृद्धि नहीं हुई' तथा 'कुछ कह नहीं सकते' में उत्तर दिया। हरिपुरकलां, अठूरवाला तथा दुधली, तीनों ही ग्राम पंचायतों में 60–60 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में उनकी भागीदारी

में 'वृद्धि हुई है', जबकि तीनों ही ग्राम पंचायतों में, पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में भागीदारी में 'वृद्धि नहीं हुई' कहने वाली महिलाओं की दर क्रमशः24,28,व 20 प्रतिशत रही तथा इस विषय में अस्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाली महिलाओं की दर क्रमशः 16 प्रतिशत, 12 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत रहीं।

उपरोक्त तालिका के विवरण से ज्ञात होता है कि ब्लॉक डोईवाला की उक्त सभी ग्राम पंचायतों के कुल उत्तरदाताओं में से 54 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात्, पारिवारिक कार्यों के सम्पादन में उनकी भागीदारी में भी वृद्धि हुई है तथा 26 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि उनके पारिवारिक जीवन में ऐसी कोई वृद्धि नहीं हुई। जबकि लगभग 20 प्रतिशत महिलाओं ने इस विषय में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी। निष्कर्षतः महिलाओं के जीवन में केवल आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक परिवर्तन भी आया है। यहाँ हम देखते हैं कि समूहों से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं का आत्म– विश्वास भी बढ़ा है। फलतः जिन पारिवारिक कार्यों के सम्पादन हेतु पहले उन्हें किसी अन्य पर निर्भर रहना पड़ता था अब उन्हीं कार्यों का सम्पादन वे स्वयं कर रहीं हैं।

सामुदायिक कार्यों में महिलाओं की भूमिका

तालिका 3.2 में महिलाओं के इसी पक्ष को दर्शाया गया है। तालिका के अनुसार ग्राम पंचायत भानियावाला में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् 60 प्रतिशत महिलाओं की सामुदायिक कार्यों की भागीदारी में वृद्धि हुई तथा मात्र 17 प्रतिशत (लगभग) महिलाओं ने माना की सामुदायिक कार्यों में उनकी भागीदारी में कोई वृद्धि नहीं हुई जबकि लगभग 23 प्रतिशत महिलाओं ने इस प्रश्न पर बड़ी उदासीन प्रतिक्रिया व्यक्त की। ग्राम पंचायत रानीपोखरी मौजा में 55 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि समूह से जुड़ने के पश्चात् सामुदायिक कार्यों में उनकी भागीदारी में वृद्धि हुई है तथा 25 प्रतिशत महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो वहीं 20 प्रतिशत महिलाओं ने इस विषय में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी।

ग्राम पंचायत रानीपोखरी ग्राण्ट में समूह से जुड़ने के पश्चात् 60 प्रतिशत महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा तो वहीं 24 प्रतिशत महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि 16 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी थी जिन्होंने इस सन्दर्भ में कोई उत्तर नहीं दिया। कान्हरवाला ग्राम पंचायत में समूहों के कारण सामुदायिक कार्यों की भागीदारी में 'वृद्धि हुई है' कहने वाली महिलाओं की दर 55 प्रतिशत रही तो वही लगभग 29 प्रतिशत दर उन महिलाओं की रही जिनकी सामुदायिक भागीदारी में कोई वृद्धि नहीं हुई जबकि 'कुछ कह नहीं सकते' उत्तर देने वाली महिलाओं की दर लगभग 16 प्रतिशत रही। ग्राम पंचायत जौलीग्राण्ट में स्वयं सहायता समूह का महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी पर पड़े प्रभाव के विषय में पूछने पर 55 प्रतिशत महिलाओं ने 'वृद्धि हुई में उत्तर दिया जबकि लगभग 23–23 प्रतिशत महिलाओं ने क्रमशः 'कोई वृद्धि नहीं हुई' तथा 'कुछ कह नहीं सकते' में उत्तर दिया। ग्राम पंचायत माजरीग्राण्ट में लगभग 55 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि समूह से जुड़ने के पश्चात् उनकी सामुदायिक कार्यों की भागीदारी में वृद्धि हुई है तथा 27 प्रतिशत महिलाओं ने 'कोई वृद्धि नहीं हुई' की बात की जबकि लगभग 18 प्रतिशत महिलाओं ने इस विषय में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भूमिका का स्तर

क्र0सं0	ग्राम पंचायत	चयनित उत्तरदाता	वृद्धि हुई	%	वृद्धि नहीं हुई	%	उदासीन प्रतिक्रिया	%
1	भानियावाला	30	18	60	5	16.6	7	23.3
2	रानीपोखरीमौजा	40	22	55	10	25	8	20
3	रानीपोखरीग्राण्ट	50	30	60	12	24	8	16
4	कान्हरवाला	45	25	55	13	28.8	7	15.5
5	जौलीग्राण्ट	40	22	55	9	22.5	9	22.5
6	माजरीग्राण्ट	55	30	54.5	15	27	10	18.1
7	रैनापुरग्राण्ट	18	10	55.5	5	27.7	3	16.6
8	हरिपुरकलां	25	15	60	6	24	4	16
9	अठूरवाला	25	14	56	6	24	5	20
10	दुधली	25	15	60	5	20	5	20
	योग	353	201	56.9	86	24.4	66	18.7

ग्राम पंचायत रैनापुरग्राण्ट में मूल उत्तरदाताओं में से लगभग 56 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी सामुदायिक कार्यों में भागीदारी में वृद्धि होने का मूल कारण स्वयं सहायता समूहों से जुड़ना माना तो वहीं लगभग 28 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि समूह से जुड़ने के बाद भी उनकी सामुदायिक कार्यों में भागीदारी में कोई परिवर्तन नहीं आया है। जबकि लगभग 17 प्रतिशत महिलाओं ने इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी। ग्राम पंचायत हरिपुरकलां में समूह से जुड़ने के पश्चात् 60 प्रतिशत महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी में वृद्धि हुई जबकि 24 प्रतिशत महिलाओं की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, तो वहीं 16 प्रतिशत महिलाओं की स्थिति तटस्थ पायी गई।

अठूरवाला ग्राम पंचायत में भी 56 प्रतिशत महिलाएं ही यह स्वीकार करती हैं कि समूह से जुड़ने के पश्चात् अन्य कार्यों के साथ–साथ सामुदायिक कार्यों में भी

उनकी भागीदारी में वृद्धि हुई है तथा 24 प्रतिशत महिलाओं का कहना था कि समूह के कारण उनके जीवन में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ जबकि 20 प्रतिशत महिलाएं इस विषय में कोई स्पष्ट जानकारी ही नहीं देती। ग्राम पंचायत दुधली में स्वयं सहायता समूह का महिलाओं की सामुदायिक कार्यों में भागीदारी पर पड़े प्रभाव के प्रश्न में 'वृद्धि हुई' कहने वाली महिलाओं की दर 60 प्रतिशत रही जबकि 20–20 प्रतिशत दर क्रमशः 'वृद्धि नहीं हुई' तथा 'कुछ कह नहीं सकते' कहने वाली महिलाओं की रही।

अतः यदि सभी ग्राम पंचायतों के कुल उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें तो हम पाते हैं कि कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 57 प्रतिशत महिलाओं ने उनकी सामुदायिक कार्यों में भागीदारी में वृद्धि होने की बात स्वीकार की तो वहीं लगभग 24 प्रतिशत महिलाओं ने कोई वृद्धि न होने की बात कही जबकि लगभग 19 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया ही नहीं दी। अतः परिणामस्वरुप कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के कारण महिलाएं सामाजिक रूप से भी सबल हो रही हैं तथा अब वे विभिन्न सामुदायिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर न केवल हिस्सा लेती हैं वरन् उन कार्यों को सफलता पूर्वक पूर्ण भी करती हैं। किन्तु फिर भी अभी भी इस दिशा में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका

तालिका –3.3 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका पर पड़े प्रभाव का विवरण दिया गया है। तालिका के अनुसार ग्राम पंचायत भानियावाला में कुल उत्तरदाताओं में से 60 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा अब वे भी परिवार के लिए निर्णय लेने लगी हैं। वहीं 30 प्रतिशत महिलाओं का मानना था कि पारिवारिक निर्णय लेने में उनकी भूमिका पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि 10 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी थी जिन्होंने इस विषय में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी। ग्राम पंचायत रानीपोखरी मौजा में लगभग 63 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका में वृद्धि हुई है जबकि 25 प्रतिशत महिलाओं ने ऐसी किसी भी प्रकार की वृद्धि से इन्कार किया तथा लगभग 13 प्रतिशत महिलाओं ने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भूमिका पर प्रभाव

क्र0सं0	ग्राम पंचायत	स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद परिवारिक कार्यों के सम्पादन में महिलाओं की भूमिका						
		कुल उत्तरदाता	वृद्धि हुई	%	वृद्धि नहीं हुई	%	उदासीन प्रतिक्रिया	%
1	भानियावाला	30	18	60	9	30	3	10
2	रानीपोखरी मौजा	40	25	62.5	10	25	5	12.5
3	रानीपोखरी ग्राण्ट	50	35	70	7	14	8	16
4	कान्हरवाला	45	25	55.5	16	35.5	4	8.8
5	जौलीग्राण्ट	40	35	87.5	3	7.5	2	5
6	माजरीग्राण्ट	55	45	81.8	8	14.5	2	3.6
7	रैनापुरग्राण्ट	18	13	72.2	3	16.6	2	11.1
8	हरिपुरकलां	25	17	68	4	16	4	16
9	अठूरवाला	25	17	68	6	24	2	8
10	दुधली	25	17	68	4	16	4	16
		353	247	69.9	70	19.8	36	10.1

ग्राम पंचायत रानीपोखरी ग्राण्ट में समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में 70 प्रतिशत महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हुई तो वहीं मात्र 14 प्रतिशत महिलाओं की स्थिति पूर्ववत् ही बनी रही जबकि 16 प्रतिशत महिलाओं का इस विषय में उदासीन रवैया देखने को मिला। कान्हरवाला ग्राम पंचायत में लगभग 56 प्रतिशत महिलाओं द्वारा स्वीकार किया गया कि समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णय में उनकी भूमिका में पहले की अपेक्षा सुधार आया है तथा लगभग 36 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जबकि लगभग 9 प्रतिशत महिलाएं तटस्थ स्थिति में थी। ग्राम पंचायत जौलीग्राण्ट में कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 88 प्रतिशत महिलाओं ने माना कि समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन आया है तो वहीं मात्र 8 प्रतिशत (लगभग) महिलाओं की भूमिका में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जबकि मात्र 5 प्रतिशत महिलाओं ने कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी।

ग्राम पंचायत माजरीग्राण्ट में पारिवारिक निर्णयों में लगभग 82 प्रतिशत महिलाओं की भूमिका में वृद्धि हुई है जबकि लगभग 15 प्रतिशत महिलाओं की भूमिका में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो वहीं लगभग 4 प्रतिशत महिलाएं ऐसी थी जिन्होंने इस विषय में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। ग्राम पंचायत रैनापुरग्राण्ट में लगभग 72 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा लगभग 11 प्रतिशत महिलाएं इस विषय में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं देती। हरिपुरकलां, अठूरवाला तथा दुधली तीनों ही ग्राम पंचायतों में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् पारिवारिक

निर्णयों में महिलाओं की भूमिका पर पड़े प्रभाव पर 68 प्रतिशत महिलाओं ने 'वृद्धि हुई' में उत्तर दिया तथा हरिपुरकलां व दुधली दोनों ग्राम पंचायतों में 16–16 प्रतिशत महिलाओं ने क्रमशः 'वृद्धि नहीं हुई' तथा 'कुछ कह नहीं सकते' में उत्तर दिया जबकि अठूरवाला ग्राम पंचायत में 'वृद्धि नहीं हुई' कहने वाली महिलाओं की दर 24 प्रतिशत तथा 'कुछ कह नहीं सकते' कहने वाली महिलाओं की दर मात्र 8 प्रतिशत रही।

उपरोक्त तालिका–3.3 के विश्लेषण के ज्ञात होता है लगभग 70 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि समूह के कारण उनकी पारिवारिक निर्णयों में भूमिका पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है जबकि लगभग 20 प्रतिशत महिलाओं ने इस बात को अस्वीकार किया तो वहीं लगभग 10 प्रतिशत महिलाओं ने इस विषय में कोई जवाब ही नहीं दिया। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की पारिवारिक स्थिति में भी परिवर्तन आया है। समूहों के कारण महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है अब पारिवारिक निर्णयों में भी महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होने लगी है।

ग्रामीण समुदाय के स्वच्छता के स्तर पर प्रभाव

तालिका–3.4 के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण समुदाय के स्वच्छता के स्तर को भी प्रभावित किया है या नहीं? यहाँ भी ब्लॉक की विभिन्न ग्राम पंचायतों में समूहों से जुड़े सदस्यों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि समूह से जुड़ने के पश्चात् क्या उनके क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में कोई परिवर्तन आया या नहीं? तालिका के अनुसार ग्राम पंचायत भानियावाला में विभिन्न समूहों से जुड़े 70 प्रतिशत सदस्यों का कहना था कि समूह से जुड़ने के पश्चात् स्वच्छता के स्तर में वृद्धि आयी है जबकि लगभग 13 प्रतिशत सदस्यों ने कहा कि स्वच्छता का स्तर पूर्ववत् ही है तथा लगभग 17 प्रतिशत सदस्यों ने कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी।

तालिका 3.4 स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद स्वचछता के स्तर पर प्रभाव

क्र0सं0	ग्राम पंचायत	कुल उत्तरदाता	वृद्धि हुई	%	वृद्धि नहीं हुई	%	उदासीन प्रतिक्रिया	%
1	भानियावाला	30	21	70	4	13.3	5	16.6
2	रानीपोखरी मौजा	40	25	62.5	10	25	5	25.5
3	रानीपोखरी ग्राण्ट	50	39	78	7	14	4	8
4	कान्हरवाला	45	29	64.4	8	17.7	8	17.7
5	जौलीग्राण्ट	40	35	87.5	1	2.5	4	10
6	माजरीग्राण्ट	55	41	74.5	6	10.9	8	14.5
7	रैनापुरग्राण्ट	18	13	72.2	3	16.6	2	11.1
8	हरिपुरकलां	25	19	76	2	8	4	16
9	अठूरवाला	25	17	68	6	24	2	8
10	दुधली	25	20	80	1	4	4	16
	योग	**353**	**259**	**73.3**	**48**	**13.5**	**46**	**13**

ग्राम पंचायत रानीपोखरी मौजा में लगभग 63 प्रतिशत सदस्यों ने स्वीकार किया कि स्वयं सहायता समूहों के कारण उनके क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है। जबकि 25 प्रतिशत सदस्यों ने इस प्रकार की किसी भी वृद्धि से इन्कार किया तथा लगभग 13 प्रतिशत सदस्य स्वच्छता के प्रश्न पर तटस्थता की स्थिति में थे। ग्राम पंचायत रानीपोखरी ग्राण्ट में 78 प्रतिशत सदस्यों ने माना कि समूहों के कारण क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि 14 प्रतिशत सदस्यों का मानना था कि स्वच्छता के स्तर में कोई वृद्धि नहीं हुई। तथा 8 प्रतिशत सदस्य इस सम्बन्ध में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। कान्हरवाला ग्राम पंचायत में लगभग 64 प्रतिशत सदस्य ही यह मानते हैं कि स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि लगभग 18 प्रतिशत सदस्यों ने 'वृद्धि नहीं हुई' तथा लगभग 18 प्रतिशत 'कुछ कह नहीं सकते' जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

ग्राम पंचायत जौलीग्राण्ट में सभी उत्तरदाताओं में से लगभग 88 प्रतिशत सदस्यों का मानना था कि स्वयं सहायता समूह के कारण स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई जबकि मात्र 3 प्रतिशत (लगभग) सदस्यों ने इसके विपरीत स्वच्छता के स्तर में वृद्धि न होने की बात की तो वहीं 10 प्रतिशत सदस्यों ने कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी। ग्राम पंचायत रैनापुर ग्राण्ट में लगभग 72 प्रतिशत सदस्यों ने क्षेत्र में स्वच्छता स्तर में आयी वृद्धि का मूल कारण स्वयं सहायता समूहों को माना जबकि लगभग 17 प्रतिशत सदस्यों का मानना था कि समूह के कारण स्वच्छता के स्तर में कोई वृद्धि नहीं हुई जबकि लगभग 11 प्रतिशत सदस्यों ने इस सन्दर्भ में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया नहीं दी। ग्राम पंचायत हरिपुरकलां में कुल उत्तरदाताओं में से 76 प्रतिशत सदस्यों ने स्वीकार किया कि समूहों के कारण क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है। जबकि मात्र 8 प्रतिशत सदस्यों ने इसके विपरीत समूहों के कारण स्वच्छता के स्तर में कोई वृद्धि न होने की बात की तथा 16 प्रतिशत सदस्यों ने इस विषय में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी।

अठूरवाला ग्राम पंचायत में 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समूहों के बनने के पश्चात् क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि 24 प्रतिशत सदस्यों का मत है कि स्वच्छता के स्तर में कोई वृद्धि नहीं हुई है तथा 8 प्रतिशत सदस्य ऐसे भी थे जो इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहते। ग्राम पंचायत दुधली में 80 प्रतिशत उत्तरदाता इस पक्ष में दिखे कि समूह के

कारण क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है जबकि मात्र 4 प्रतिशत सदस्य इसके विपरीत इस पक्ष में थे कि स्वच्छता के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा अथवा पूर्ववत् ही है। वहीं 16 प्रतिशत सदस्य इस विषय पर तटस्थ थे।

सम्पूर्ण तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है उक्त सभी ग्राम पंचायतों के 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि समूह के कारण क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि आयी है जबकि लगभग 14 प्रतिशत उत्तरदाता क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर को पूर्ववत् ही बताते हैं तो वहीं 13 प्रतिशत सदस्य इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात् समूह के सदस्यों में अपनी तथा अपने आस–पास की स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है फलतः वे अपने घर के साथ–साथ बाहर की सफाई का भी ध्यान रखने लगे हैं। जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र में स्वच्छता के स्तर में वृद्धि होना स्वाभाविक है। किन्तु फिर भी अभी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति और अधिक जागरुकता फैलाने की आवश्यकता है।

च) स्वास्थ्य के स्तर पर प्रभाव

तालिका–3.5 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्राम पंचायत भानियावाला में 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समूहों के कारण क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि 10 प्रतिशत सदस्य इस बात को अस्वीकार करते हैं तथा 20 प्रतिशत सदस्य इस सन्दर्भ में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त ही नहीं करते। ग्राम पंचायत रानीपोखरी मौजा में कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि स्वयं सहायता समूहों के कारण क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि समूहों के कारण स्वास्थ्य के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वहीं लगभग 10 प्रतिशत सदस्य इस विषय में कुछ नहीं कहते।

ग्राम पंचायत रानीपोखरी ग्राण्ट में 82 प्रतिशत उत्तरदाता समूह के कारण स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि होने की बात पर सहमति प्रदान करते हैं जबकि इसके विपरीत 10 प्रतिशत उत्तरदाता उक्त बात पर असहमति जताते हैं तथा 8 प्रतिशत उत्तरदाता कोई प्रतिक्रिया ही नहीं देते। कान्हरवाला ग्राम पंचायत में सभी उत्तरदाताओं में से लगभग 89 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरुक हुए हैं फलतः क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि मात्र 4 प्रतिशत स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि न होने की भी बात करते हैं तथा लगभग 7 प्रतिशत सदस्य इस विषय में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। ग्राम पंचायत जौलीग्राण्ट में लगभग 76 प्रतिशत उत्तरदाता समूहों के कारण स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि होने की बात करते हैं, तो वहीं लगभग 13 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य के स्तर में न होने की बात करते हैं जबकि 10 प्रतिशत सदस्य इस विषय में उदासीन प्रतिक्रिया भी देते हैं।

तालिका 3ण्5 स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद स्वास्थ्य के स्तर पर प्रभाव

क्र0सं0	ग्राम पंचायत	कुल उत्तरदाता	वृद्धि हुई	%	वृद्धि नहीं हुई	%	उदासीन प्रतिक्रिया	%
1	भानियावाला	30	21	70	3	10	a	20
2	रानीपोखरी मौजा	40	26	65	10	25	4	10
3	रानीपोखरी ग्राण्ट	50	41	82	5	10	4	8
4	कान्हरवाला	45	40	88.8	2	4.4	3	6.6
5	जौलीग्राण्ट	40	31	75.5	5	12.5	4	10
6	माजरीग्राण्ट	55	40	72.7	8	14.5	7	12.7
7	रैनापुरग्राण्ट	18	13	72.2	3	16.6	2	11.1
8	हरिपुरकलां	25	20	80	2	8	3	12
9	अठूरवाला	25	21	84	3	12	1	4
10	दुधली	25	19	76	1	4	5	20
	योग	353	272	77	42	11.8	39	11

ग्राम पंचायत माजरीग्राण्ट में लगभग 73 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में आयी वृद्धि का कारण स्वयं सहायता समूहों को भी माना जबकि लगभग 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समूहों के कारण स्वास्थ्य के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वहीं लगभग 13 प्रतिशत सदस्य ऐसे भी थे जिन्होंने इस विषय में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी। ग्राम पंचायत रैनापुर ग्राण्ट में कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि समूहों के कारण क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में वृद्धि हुई है जबकि लगभग 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वास्थ्य के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ वह पूर्ववत् ही बना हुआ है तो वहीं लगभग 11 प्रतिशत उत्तरदाता इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट जानकारी प्रदान नहीं करते। ग्राम पंचायत हरिपुरकलां में समूह के कारण स्वास्थ्य स्तर में वृद्धि हुई कहने वाले उत्तरदाताओं की दर 80 प्रतिशत रही जबकि वृद्धि नहीं हुई कहने वाले उत्तरदाताओं की दर मात्र 8 प्रतिशत रही। इस विषय में अनभिज्ञता दर्शाने वाले उत्तरदाताओं की दर 17 प्रतिशत रही।

अठूरवाला ग्राम पंचायत में 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि स्वयं सहायता समूहों के कारण इनके क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन आया है जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे किसी भी परिवर्तन से इन्कार करते हैं तथा मात्र 4 प्रतिशत

उत्तरदाता अस्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। ग्राम पंचायत दुधली में कुल उत्तरदाताओं में से 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था कि उनके क्षेत्र में स्वास्थ्य के स्तर में आयी वृद्धि का एक मुख्य कारण स्वयं सहायता समूह भी हैं। वहीं दूसरी ओर मात्र 4 प्रतिशत उत्तरदाता समूहों के कारण स्वास्थ्य के स्तर में किसी प्रकार की वृद्धि न होने की बात करते हैं जबकि 20 प्रतिशत सदस्यों ने कोई स्पष्ट जानकारी प्रदान नहीं की।

इस प्रकार हम पाते हैं कि कुल उत्तरदाताओं में से लगभग 73 प्रतिशत सदस्यों का मानना है कि स्वयं सहायता समूहों के कारण ब्लॉक में स्वास्थ्य स्तर में वृद्धि हुई है जबकि लगभग 14 प्रतिशत उत्तरदाता स्वास्थ्य के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होने की बात करते हैं तथा 13 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात् लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक हुए हैं। अब वे अपनी व अपने पारिवारिक सदस्यों की स्वास्थ्य सम्बन्धी छोटी–छोटी समस्याओं को अनदेखा न करके उनका सम्पूर्ण वैज्ञानिक इलाज कराते हैं। फलतः अब ब्लॉक डोईवाला के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के स्तर में भी सुधार आया है।

अतः उपरोक्त समस्त तालिकाओं के विस्तृत विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाएं परिवार, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि के प्रति तो जागरुक हुई हैं इसके साथ ही उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है। फलतः एक ओर जहाँ अब वे अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामुदायिक निर्णय स्वयं लेने लगी हैं तो वहीं दूसरी ओर पारिवारिक व सामुदायिक कार्यों में उनकी भागीदारी में भी वृद्धि हुई है तथा जिन कार्यों के लिए पहले वह परिवार अथवा समुदाय के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहती थी अब वे उन कार्यों का सम्पादन स्वयं करने लगी हैं। अब वे अपने समय के महत्त्व को समझते हुए उसका पूर्ण सदुपयोग किसी न किसी लाभकारी कार्य के लिए करने लगी है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं के सामाजिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है किन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो समूहों के द्वारा सम्पूर्ण ग्रामीण समुदाय का सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है। समूहों से जुड़ने के कारण सदस्य महिलाओं का तो सामाजिक विकास हुआ ही है साथ ही इसके दीर्घकालिक परिणाम सम्पूर्ण ग्रामीण समुदाय के सर्वांगीण सामाजिक विकास के रूप में स्पष्ट देखे जा सकते हैं।

संदर्भग्रन्थ

स्वयं सहायता समूह गठन के लिए प्रशिक्षकों हेतु मार्गदर्शिका, ग्रामीण डेवलपमेण्ट सर्विसेज,लखनऊ नवनीत पब्लिकेशन लखनऊ

.संगठन से सशक्तता की ओर, जलागम प्रबन्धन निदेशालय, देहरादून,उत्तराखण्ड

महिला सशक्तिकरण(प्राविधान,प्रयास एवं अपेक्षाएं) प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र,शंकरपुर,देहरादून,2014 ई0

शर्मा सुभाष ,विकास का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, वर्ष 2012

कौटिल्य अर्थशास्त्र, अनु0 प्राणनाथ विद्यालंकार,1923ई0,प्र0 मोतीलाल बनारसी दास,सैद मिट्ठा बाजार लाहौर

दुबे श्यामाचरण, विकास का समाजशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली , वर्ष–2010,,

मदन जी० आर०, विकास का समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली

उत्तराँचल विकेन्द्रीकृत जलागम विकास परियोजना, परियोजना कार्य–दिग्दर्शिका, जलागम प्रबन्ध निदेशालय उत्तराँचल, देहरादून, अक्टूबर–2004

पटनी चन्द्रा, ग्रामीण स्थानीय प्रशासन, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली

दुबे श्यामचरण, अनु०–अटल योगेश, भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,, (वर्ष 2017)

सिंह बैजनाथ, सामुदायिक ग्रामीण विकास, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, नई दिल्ली, (वर्ष 2013)

सिंह आर० बी०, ग्रामीण समाजशास्त्र, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली

सिंह वी० एन०, सिंह जनमेजय, भारत में सामाजिक आन्दोलन, रावत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, (वर्ष–2013)

सिंह वी० एन०, सिंह जनमेजय, नारीवाद, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली (वर्ष–2012)

सेमवाल गोविन्दा नन्द, उत्तराँचल नगर और नगर पालिकाएं, उत्तराखण्ड प्रकाशन, देहरादून, (वर्ष 2003)

गुप्ता प्रो० एम० एल०, शर्मा डा० डी० डी०, सामाजिक अनुसंधान पद्धतियां साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, (वर्ष 2009)

विनसर,उत्तराँचल इयर बुक,2015,सं0 लोकेश नवानी

Director of Census Uttrakhand, District Census Handbook,Dehradun series-06, 2011

Agrawal Meenu , Nelaso Shbana, Empoernment of Rural Women in India, New Delhi, Kanishka Pub,2009

Raja Redddy.k , Reddy C.S, Self Help Group In India, Hyderabad, Enable Publisher,2012

Partiyogita Darpan, issues: March2012, June 2013, July-2014, Oct-2016 Oct-2017, april-2018, September- 2018,

Dainik Jagran, Wednesday, 28 Feb 2018, Hindi newspaper